प्रातः क्लास 1-11-1968 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप जानते हैं कि रूहानी बच्चे सामने बैठे हैं। रूहानी बच्चे भी जानते हैं कि रूहानी बाप सामने बैठे हैं। यह भी जानते हो रूहानी बाप तो एक ही है। अभी रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं जिन बच्चों के अन्दर में यह दिल होती है कि हम कुछ साक्षात्कार करें तो निश्चय हो जाये कि हम फलाना पद पावेंगे या जो पद प्राप्ती करना है उनका भी सा० करें। टीचर का भी सा० करें। टीचर जो पढ़ाते हैं और जो पद प्राप्त कराते हैं उनका भी सा० करें। जिनको अन्दर में दिल होती है सा० करें वह हाथ उठावे। जैसे भक्ति में सा० के लिये कितनी नवधा भक्ति करते हैं। भक्तिमाल भी है ना। यह फिर है रुद्र माल। इनमें फिर सभी बच्चे हैं। वह बच्चे नहीं कहेंगे। वह है भक्ति। यह रुद्र माल है ईश्वर की माला। तो जिनके दिल में आशा है कि हम ईश्वरीय का सा० करें, कृष्ण अथवा ना० का सा० करें वह हाथ उठावे। (कईयों ने हाथ उठाई।) हाथ जिन्हों ने उठाय है उन्हों के नाम नोट करो। बाबा के पास कई आते हैं बोलते हैं बाबा हमको सा० होगा? तो बाबा पूछते हैं किसका सा० चाहिए। कहते हैं शिव बाबा का भी सा० चाहिए और देवता पद का भी सा० चाहिए। हम ध्यान में जाना चाहते हैं। यूं तो चित्र में भी देखते हैं यह ल०ना० खड़े हैं ना। परन्तु चाहते हैं सा० हो। तो निश्चय बैठे। बिगर सा० निश्चय कैसे हो। फिर इन्हों को जो ब्रह्माकुमारियां पढ़ाती हैं उन से पूछेंगे तुम क्यों नहीं इनकी सा० की आशा पूरी करती हो। तुम बच्चे जानते हो एक बाप को जानने से हमारी सभी आशाएं मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। फिर यह मनोकामना कहां से निकली? गायन है ना बेहद के बाप को जानने से सभी कामनाएं 21 जन्मों के लिये पूरी हो जाती है। अभी फिर सा० चाहते हैं सा० हो। यह तो है जानने की बात। शिव का चित्र भी रखा है। फिर पहचान देते हैं। कब शिव का मंदिर देखा है व उसमें शिव का चित्र देखा है आंखों से। सा० तो फिर दिव्यदृष्टि से करेंगे। वह कोई देखने की चीज़ तो है नहीं। है जानने की। मैं आत्मा हूं, बरोबर परमपिता परमात्मा का बच्चा हूं। हम भी बिन्दी मिसल हैं। इन आंखों से देखा नहीं जा सकता। बिन्दी को देखने से भी कोई फायदा नहीं। निश्चय तो है वह बिन्दी है। भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। रोज समझाया जाता है। यह शरीर आरगन्स है। इन द्वारा आत्मा पार्ट बजाती है। बिन्दी को देखना बड़ा मुश्किल है। कोई को बैरीस्टर बनना होगा तो जाकर बैरीस्टर को देखेंगे यह है पढ़ाने वाला। उनका नाम फलाना है। इस पढ़ाई से हम बैरीस्टर बन जावेंगे। सिर्फ टीचर को देखने से तो नहीं बनेंगे। वह है देहधारी का देहधारी से योग। टीचर पास कोई बिगर एमआबजेक्ट तो पढ़ न सके। फिर अन्दर में संशय रह जाता है। बच्चा जन्म लेता है और समझा जाता है यह बच्चा पैदा हुआ है, फलाने के प्रार्प्टी का वारस बनेगा। पहले से ही जाना जाता है। फलाने का बच्चा इनके प्रार्प्टी का मालिक बन जावेगा। बच्चे के आरगन्स तो छोटे हैं, वह तो जान सकता नहीं। दूसरे जानते हैं यह बच्चा इनके प्रार्प्टी का वारस बना। कोई शादी करते हैं तो कहेंगे इनके मिलकीयत का यह अर्धांगनी ठहरी। तुम बच्चे तो यहां एडाप्टेड होते हो। तो यह जानना चाहिए हम फलाने के एडाप्टेड बच्चे हैं। एडाप्टेड होती हूं। इससे पहले जानना चाहिए ना। हमको क्या मिलना है। तुम उनके बच्चे बनते हो, शिव बाबा कहते हैं तो बाप की प्रार्प्टी का राज़ मालूम होना चाहिए। यह तो जानते हो बाप को जानने से सभी कामनाएं पूरी हो जाती हैं। बाकी क्या चीज़ का सा० करें जब कि एडाप्ट हो चुके। समझ से एडाप्ट होना होता है ना। बिगर समझ तो एडाप्ट हो न सके। समझ बिगर एडाप्ट होते हैं तो उनको जानवर से भी बदतर कहा जाता है। तुम बाबा समझ कर यहां आते हो। बाबा समझने बिगर तो आ नहीं सकते। अगर बाप समझने बिगर आ जाते हैं तो गोया ब्राह्मणी का दोष है। जानते नहीं है हम बाबा पास जाते हैं। अन्दर में संशय है। पता नहीं है बाबा से हमको क्या मिलना है कैसे मिलना है। समझते हैं सा० हो तब निश्चय हो। अभी सा० क्या चीज का हो। एडाप्ट होने के पहले जानना चाहिए ना। एडाप्ट होने बिगर तो बाप से मिल न सके। कहते हैं सा० होता निश्चय बैठे। ऐसे बहुतों के ख्याल में आता है। सा० न होने कारण, डायरेक्शन मिल

हैं (अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो) उसपर चलते ही नहीं। याद किसको करे। यहां ऐसा कोई है जिस को शिव का सा० हुआ है। जिन्होंने शिव को देखा है वह हाथ उठावे। मैं जानना नहीं कहता हूं, इन आंखों से देखना कहता हूं। (जिन्होंने शिव का सा० किया था उन्होंने हाथ उठाया) तुमने दिव्यदृष्टि से शिव को देखा है। फिर दूसरे को दिखलाये सकते हो? तुमको किसने सा० कराया? (शिव बाबा ने) तुम कैसे कहते हो कि शिव बाबा की आत्मा था? तुम्हारी आत्मा भी तो बिन्दी ही है। फर्क तो कुछ है नहीं। वह भी बिन्दी है वह भी बिन्दी है। तुम कहती हो हम शिव बाबा का सा० किया, मैं कहता हूं ~~xx~~ मैं कहता हूं आत्मा का किया। तुम कैसे कहते हो शिव बा किया। फर्क क्या था? इस पर बाबा रात को सभी से पूछेंगे। जिन्होंने सा० किया है उनका सेमीनार कराना। शिव का सा० किया है या आत्मा का किया है। बाबा परीक्षा लेंगे। तुम कहते हो हमने सा० किया है। यह बाबा का रथ बैठा है। यह कहता है हमने तो कभी भी शिव का सा० नहीं किया। आत्मा और परमात्मा के सा० में कुछ फर्क देखने में नहीं आता। बाप कहते हैं मैं तो ज्ञान का सागर हूं। तुमको भी बना रहा हूं, बस और तो कुछ फर्क है नहीं। ऐसे भी नहीं कि बहुत तेजोमय देखने में आवेगा। आत्मा आत्मा ठंढी दिखाई पड़ेगी। बाबा खुद कहते हैं हमको सा० हुआ नहीं है। बाकी निश्चय है बाप पढ़ाते हैं। सा० हो वा न हो इसकी कोई प्रवाह नहीं। यह तो जानने की बात है। सा० भक्ति मार्ग में होते हैं, प्राप्ती कुछ भी नहीं। यहां भी जिनको सा० होते हैं प्राप्ति कुछ भी नहीं। बाबा कहते हैं मैं ने कोई सा० करके धंधा आदि नहीं छोड़ा था। देखते थे औरों को कृष्ण आदि के सा० होते हैं थे। ऐसे कब कोई ने कहा नहीं कि शिव बाबा का हमने सा० किया। तो बाबा देखते हैं कौन2 चाहते हैं हमको सा० हो। सा० न होगा तो शायद टूट जावेंगे। कहेंगे सा० बिगर योग भी कैसे लगा सकते। किसको सा० होता है किसको नहीं होता है। यह भी पता निकालें सा० से क्या फायदा होताहै, न सा० सा० से क्या फायदा होता है। तीखे कौन जाते हैं। ऐसे बहुत आते हैं, कहते हैं बाबा हमको सा० तब निश्चय हो। वे विचारे योग तो लगा नहीं सकते। वह आश्चर्यवत कथन्ति सुनन्ति ~~xx~~=पश्यन्ति भागन्ति हो जावेंगे। जिनको निश्चय है वह तो समझते हैं बाप इसमें बैठ हमको पढ़ाते हैं। यह ज्ञान सिवाय बाप के और कोई तो दे न सके। ज्ञान का सागर बाप ही पढ़ाते हैं। ऐसे और कोई कहभी न सके कि तुम अपने को आत्मा समझो बाप को याद करो। यह बाप ही समझाते हैं। तो ऐसे नहीं कि सा० हो तब याद करें। यह तो बुधि से समझने की बातें हैं। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। हम ब्रदर्स हैं। बिगर सा० के निश्चय बैठ जाता है। इसमें सा० की तो दरकार ही नहीं। बुधि से समझते हैं हम आत्माएं सभी भाई2 हैं। हम भाईयों का बाप एक है। किसको भी समझाने से झट समझ जाते हैं। बाप खुद कहते हैं हे बच्चों मैं इन में प्रवेश कर तुमको पढ़ाता हूं। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा में ही कर्मों का संस्कार अच्छे वा बुरे रहते हैं। सा० तो किसका किया हुआ नहीं है। तुमने कब आत्मा का सा० किया है। जो कहते हैं बाबा का किया है। जिसने आत्मा का सा० किया है वह हाथ उठावे। ~~को~~ (कोई नहीं) अपना ही सा० नहीं किया है तो फिर बाप का कैसे करेंगे। पहले2 तो आत्मा को ही रियलाईज करना है। आत्मा का सा० करे तब बाप का भी हो। परमात्मा का सा० करना कोई जरूरत ही नहीं देखने में आते हैं। क्या तुम आश लगाकर बैठते हो कि शिव बाबा का सा० हो। भक्ति मार्ग में सा० करते हैं, प्राप्ति कुछ तो है नहीं। सिर्फ खुशी होती है। उसमें पुरुषार्थ की तो बात ही नहीं। भल कृष्ण का विष्णु का सा० करे तो भी फायदा कुछ भी नहीं होता है। यह भी ऐसे है। कोई सा० भी करना चाहे फिर भी पढ़ाई बिगर तो पद मिलना नहीं है। जिन्होंने सा० कुछ भी नहीं किया वह सा० करने वालों से भी ऊंच पद पा सकते हैं। बाकी सा० से क्या फायदा हुआ। बाबा जांच करते हैं तीखे कौन जाते हैं। अगर आत्मा का भी किया है, परमात्मा का भी सा० किया है तो वह सभी से तीखे जानी चाहिए। जांच करनी पड़े। बाबा को सा० के लिये कहते हैं तो बाबा समझ जाते हैं सा० न होगा तो दिन में सिकस्त रहेगी। पुरुषार्थ कर न सकेंगे। बाबा जानते हैं सा० से कब फायदा नहीं हो सकता। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध

मिलती है। हम आत्मायें परमपिता परमात्मा की सन्तानहैं। यह तो एकदम निश्चय हो जाना चाहिए। बाकी है सारा पढ़ने और पढ़ाने पर मदार। तुमको सा० आपे ही हुआ या ईच्छा हुई? बाबा तो समझते हैं ईच्छामात्रम् अविद्या। यहां तो बात ही एक है। बाप के बने हो तो बाप से विश्व की बादशाही का वरसा मिलता है। समझते हैं वह हमारा बाप है। आत्मा जानती है बेहद के बाप के हम बच्चे हैं। ऐसे नहीं कि सा० कर पीछे बने हैं। यह तो बुधि से समझना होता है। बरोबर हमारे दो बाप हैं। वह भी नाराकार है, हम आत्मायें भी निरा० हैं। बुलाते भी उनको हैं। वही आकर नालेज सुनाते हैं। इसमें देखने न देखने का तो सवाल ही नहीं उठता। बाप के ज्ञान से ही सिध होता है। मनुष्य से देवता बनने का ज्ञान बाप ही देते हैं। बाबा सभी से पूछते भी हैं तुम किसके पास आये हो? कहते हैं शिव बाबा के पास। बिगर सा० के निश्चय नहीं तो फिर यहां आये क्यों हो। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। और कहां भी सतसंगों में ऐसे नहीं कहेंगे कि देह के सभी धर्मों को छोड़मुझ एक बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। यह तो बाप ही कहते हैं। बाकी सा० आदि से कुछ फायदा नहीं हैं। फिर भी माया साथ युध चलती है। ऐसे नहीं कि वह हरा नहीं सकती है। सा० करने वाले से भी न करने वाले लोखे चले जाते हैं। सा० का सवाल भक्ति-मार्ग में होता है। यहां ज्ञान मार्ग में होता नहीं। ज्ञान-मार्ग बिल्कुल अलग हैं। बाप समझाते हैं सा० से कुछ भी फायदा नहीं होता। उन्हों को तो नीचे उतरना ही है। तमोप्रधान बनना ही है। बाकी फायदा क्या। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा से हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वरसा मिलना ही है। सभी को बाप से वरसा जरूर मिलना है। बाप खुद कहते हैं जो भी मनुष्य मात्र हैं जिन्हें देखे जाने उन सभी की सदगति कर ही देता हूं। क्योंकि तुम बच्चे पढ़ रहे होतो तुम्हारे लिये नई दुनिया जरूर चाहिए। बाकी सभी को घर ले जाता हूं। बाकी सा० से कुछ फायदा की बात नहीं। सा० वाले भी हराये लेते हैं तो फायदा क्या हुआ। बाप तो कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कटे। और कोई उपाय है नहीं। एक बाप से सभी बच्चों को एक ही मत मिलती है। वह है सुप्रीम मत। बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो। 5000 वर्ष पहले भी तुमको ऐसे ही समझाया था। क्योंकि तुम बुलाते रहते हो हे पतित-पावन बाबा आकर हमको पावन बनाओ। सदगति दो। तो तुम्हारे कारण सभी की सदगति मिल जावेगी। फिर उनको सा० होता है क्या अहो प्रभु तेरी लीला कहते हैं वह भी बेसमझ से। बेहद का बाप आया हुआ है। विनाश से पहले जरूर स्थापना होगा। पहले2 देवी देवताओं की ही राजधानी थी। और तो सिर्फ अपना2 धर्म स्थापन करते हैं। राजधानी नहीं स्थापन करते हैं। कोई भी आकर राजयोग सिखला न सके। ऊपर से एक आता है, वह आकर धर्म स्थापन करते फिर एक एके के पिछाड़ी सभी आते जाते हैं। यहराजधानी तो हो न सके। जब लाखों के अन्दाज में हो तब फिर राजाई कर सके। यहसमझ की बात है ना। बाप कहते हैं एआबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह है पावन तुम हो पतित। इसलिये बुलाते हो ह हमको पावन दुनिया का मालिक बनाओ। वहां है ही देवी देवताओं का राज्य। परन्तु मनुष्यों की पत्थर बुधि ऐसी है जो इतनी सहज बात भी बुधि में नहीं आती। समझते हैं कलियुग तो अजन रेड़ी पहन रही है। यह कैसे हो सकता। तुम तो निश्चय से कहते हो ना। बाप से पढ़न इसमें भक्ति की तो बात ही नहीं। कोई कहे सा०। बोलो डियर नो ईवील। हमको सा० हो यह तो सुनना नहीं चाहिए। दरकार ही नहीं। बाप को जानने से बच्चे सभी कुछ जान जावेंगे। परमपिता परमात्मा को जान उनका वरसा सदगति का मिल जावेगा। परमात्मा हमारा बाप है, हम उनके बच्चे हैं, फिर हम कलियुग में व हैं। सतयुग में क्यों नहीं हैं। बाप उत्तर देते हैं तुम बरोबर देवतायें थे। फिर 84 जन्म लेते2 यह बने हो। अभी तुमको देवता बनाते हैं। इसमें सा० की तो बात ही नहीं। यह आशा न रहनी चाहिए। आशा पूरी न होने फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह भक्ति-मार्ग की आशा है। इस ज्ञान-मार्ग में आशा आदि उठ नहीं सकता। सा०। हुआवह भी समझ तो है नहीं। आत्मा तो एक जैसी है। कैसे मालूम पड़ेगा कि यह शिव है। आत्मा क्या है यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते। अभी तुमको कितना ज्ञान मिलता है। समझो आत्मा का सा० भी हुआ परन्

फिर भी समझ नीचे हिर ना। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। ज्ञान बिगर सा० हुआ वह क्या बड़ी बात हुई। रिचंक भी फायदा नहीं। बिन्दी देखा फिर क्या फायदा। भक्ति मार्ग में भी ज्ञान नहीं हैं तो गिरते ही जाते हैं। यहां भी ज्ञान नहीं है तो कोई काम के नहीं। बाप कहते हैं जो सा० कर के ज्ञान उठाते हैं तो कच्चे ही जाते हैं। क्योंकि सिर्फ सा० की ओट पर चलते हैं। बिगर सा० वाले बिगर कोई ओट के चलते हैं। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बाबा पूछेंगे सा० से क्या फायदा हुआ। आत्मायें तो ढेर के ढेर हैं। सा० किया सो क्या हुआ। बाबा पूछेंगे सा० कब, कैसे हुआ। बाबा जब कि खुद बैठ पढ़ाते हैं फिर देखेंगे क्या। तुम मेरे बच्चे हो ना। तुमको कहता हूं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। ऐसे और कोई बोल न सके। सुनकर कहेगा तो वह झूठा निकल पड़ेगा। उसका तीर किसको लगेगा ही नहीं। हां अच्छी रीत समझ कर फिर किसको कहते हैं तो समझेंगे जरूर इनको निश्चय है तो तब तो कहते हैं ना। पूछेंगे तुम यह कहां से सीखे। आश्रम कहां हैं। झूठ तो कोई की चल न सके। भल खुद निश्चय न होता है दूसरों को कहते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। ऐसे किसका कल्याण कर सकते हैं। अपना कर न सके। पतित-पावन बाप को याद करने से ही पाप कटते हैं। भल खुद ब्राह्मण न हो परन्तु दूसरों को मंत्र दे देवे तो उनका फायदा हो सकता है। यह बड़ी समझने की बात है। बाकी सा० आदि से कुछ भी होना नहीं हैं। यह भक्ति-मार्ग की पुरानी आदत है। कृष्ण की कितनी भक्ति करते हैं। सा० भी हो जाये किसको। परन्तु फायदा कुछ भी नहीं। और ही गिर पड़ते हैं। बिगर निश्चय तो कोई यहां आ न सके। पढ़ेंगे ही कैसे। ब्राह्मण कैसे कहलावेंगे। अच्छा मीठे 2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

31-10-68 प्रातः क्लास के रही हुई पायन्ट्स :-

तुम बच्चे जानते हो हम स्वर्ग में आवेंगे तो वहां बाप को याद नहीं रखेंगे। बाप अभी कितना याद कराते हैं जो तुम्हारे नाक में दम चढ़ा देते हैं। सतयुग में जावेंगे तो फिर कभी नहीं याद करेंगे। कितना वन्डर है। बाप कहते हैं अच्छा वहां तुम भल याद नहीं करना। परन्तु अभी तो अ करो ना। फिर क्यों कहते हो बाबा भूल जाता हूं। सतयुग में भल भूलना यहां तो नहीं भूलो ना। संगम पर ही तुमको यह समझाया जाता है। अच्छा अभी याद करने का पार्ट है तो करो ना। यहां तुम जब सम्मुख आते हो तो तुमको भासना अच्छी आती हैं। यह खुशी फिर आस्ते 2 सोडावाटर हो जाता हैं। बाप को तो बहुत खुशी से याद करना पड़े। बच्चे भी फील करते हैं बाबा कहते हैं बिल्कुल ठीक है। यह नालेज है। ऐसे नहीं कि बाबा अन्तर्यामी है। बाप फिर बच्चों को कहते हैं अभी याद करो। अपना पद तो पा लो। बाप की प्लैनिंग ही अपनी है। वह तो सभी जानते हैं। भारत को सुखी बनाना बाप का ही काम है। आफीसर लोग अनेक राय निकालते हैं। प्लैन बैठ बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम अपना प्लैन अपने पाकेट में रखो। हम ऐसा प्लैन बनाते हैं जो भारत ही स्वर्ग बन जावेगा। उसमें सभी सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम सभी के बदली हमारा बाबा का प्लैन भारत को स्वर्ग बनाता है। वह हमारा तो क्या तुम्हारा भी बाबा है। उनके पास सारी प्लैनिंग है कि कैसे नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाना है। कितना सहज प्लैन है। इसलिये उनको जादूगर भी कहते हैं। तो ऐसे बाप का मददगार बनना चाहिए। इसमें देहीअभिमानी भी बहुत चाहिए। फैमीलिरिटी भी बहुत खराब है। इसमें बड़ी सम्भाल चाहिए। हंसी की बात नहीं। टाइम वेस्ट न करना है। इससे तो बाप को याद करने में कल्याण होगा। हंसी-कुड़ी में बहुत ही नुकसान हो जाता हैं। बाप कहते है अपने को आत्मा समझो हम सभी भाई 2 हैं। सभी ब्रदर्स हैं। सभी बच्चों को वरसा लेने का हक है। तुम सभी हकदार हो। अभी टाईम है। तुम फेरा पा सकते हो। बाकी लौकिक बाप का वरसा नहीं पा सकेंगे। शरीर पर भरोसा नहीं है। तो भी जीते रहे तो वरसा पा लेंगे। बाप ही आकर मुक्ति जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। ओम